चतुर्थ अध्याय

सूर्यबाला की कहानियों का परिवेशगत अध्ययन

चतुर्थ अध्याय

सूर्यबाला की कहानियों का परिवेशगत अध्ययन

साठोत्तर काल की एक प्रमुखतम् महिला कहानीकार के रूप में पहचानी जानेवाली सूर्यबाला जी की कहानियाँ मानवीय धरातल को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करती है। अपने अनुभवों को शब्द रूप देती हुई ये कहानियाँ मानवीय रिश्तों की नयी पहचान करा देती हैं। इसी कारण संख्या की दृष्टि से बहुत कम होने पर भी इनकी कहानियाँ बहुचर्चित रही हैं। इनकी कहानियों की काफी समीक्षा भी की जा चुकी है। ऐसा कहा जाता है कि कोई भी संवेदनशील लेखक या लेखिका अपने आस-पास के वातावरण, अपने परिवेश को अपने साहित्य में अंकित कर ही देता है। ये वातावरण, ये परिवेश, ये परिस्थितियाँ उसे प्रेरणा देने का कार्य करती हैं। इनसे साहित्यकार प्रभावित होता है और इन्हीं के बल पर वह उन्हीं घटनाओं को वह अंकित करता है, जिसे उसने कहीं-न-कहीं, कभी-न-कभी अनुभव किया है। इस प्रकार अनुभव के आधार पर लिखा गया साहित्य बहुत ही अधिक प्रभावशाली बन पड़ता है। सूर्यबाला जी भी इसके लिए अपवाद नहीं हैं। सूर्यबाला जी ने भी जिन परिस्थितियों को देखा है, भोगा है, जिस परिवेश में वे पली-बढ़ी है, उनका चित्रण अपनी कहानियों में किया है। हृदयेश मयंक जी इन कहानियों के परिवेश के संदर्भ में टिप्पणि करते हैं - ''रचना के परिवेश में पशु, पक्षी, सागर, तालाब, पेड़, पौधे, गाँव, खेत, खलिहान और रचनाकार के हिस्से का आकाश, उसकी बुनावट में मदद करते हैं। सूर्यबाला स्त्री-पुरूष, घर-परिवार के संबंधों को एक नया आयाम देती है। इसके पीछे उनके मध्यवर्गीय परिवार की स्मृतियाँ व अनेक ऐसे संदर्भ सहायक बनते हैं जिन्हें स्वयं कथाकार ने जीया है।''[1] अर्थात् मयंक जी भी मानते हैं कि सूर्यबाला जी के परिवेश ने उन्हें प्रेरणा दी है।

4:1 सूर्यबाला की कहानियों में परिवेश -

वैसे भी सूर्यबाला जी के द्वितीय कहानी संग्रह 'थालीभर चाँद' पढ़ लेने से इस बात का पता चल ही जाता है कि उनकी सारी कहानियों के लिए उन्होने अपने अनुभवों से ही प्रेरणा ली है क्योंकि इस संग्रह में हर कहानी से पहले उन्होने उस कहानी के संदर्भ में अपने विचारों को व्यक्त किया है, इससे यह बात साफ जाहीर हो जाती है। जैसे 'रहमदिल' कहानी के आरंभ में ही उन्होने स्वीकार किया है कि निम्न वर्ग के लोगों के साथ उनका वास्ता बहुत कम पड़ता है और इसी कारण वे ऐसी कहानियाँ नहीं लिखती। लेकिन यह कहानी

आप-ही-आप उनकी झोली में डाली गयी है। वे कहती हैं - "मेरे ठीक सामने की बर्थ पर ही दोनों सफर कर रहे थे। छुट्टियों में घर-मुलक पहुँच पाने की ललक और अपनों के बीच जल्दी ही हो पाने का सुकून निश्चिंतता से बीड़ी पीता, बुझाता, बीबी-बच्चों-को लाड़भरी मातबरी से डांटता और वह सकीना-चेहरे पर कुछ भी सुंदर कहे जाने लायक न होने पर भी लच्छे-लच्छे जानदार शब्दों से भरे-पूरे कोषवाली जेहन से भरपूर औरत। लेकिन देखते-देखते वे, उनका सुख-चैन और सुकून एक दयनीय लाचारी में तब्दील हो गए। कोई उन्हें सही-गलत का ज्ञान करानेवाला नहीं था। उनके अज्ञान और भोलेपन का फायदा उठाकर टी.सी. उन्हें एक तरफ बुला कर पूरे कांइयेपन से लूट रहा था और वे इसे अपने नशीब का फेर समझ रहे थे।"[2]

लेखिका के इस मंतव्य से साफ जाहिर हो जाता है कि यह कहानी उनके अपने नीजी अनुभव पर ही आधृत है। सूर्यबाला जी की कहानियों के परिवेश को जाँचने के लिए उनके संग्रहों की कुछ प्रमुख कहानियों को लिया जा सकता है।

बैसे तो सूर्यबाला जी की लगभग सभी कहानियों में पारिवारिक माहौल को अंकित किया गया है परंतु फिर भी इन कहानियों में कुछ अलग ही तरह के माहौल को अंकित किया गया है जो उन कहानियों को अन्य कहानियों से अलग करता है और इन कहानियों से स्वयं लेखिका की मानसिकता भी अंकित हो गयी है।

सूर्यबाला जी की 'झील' कहानी में उच्चवर्गीय परिवार के आतंकित माहौल को अंकित किया है जहाँ घर में पति के आने पर शांति प्रस्थापित हो जाती है। एक ऐसा वातावरण तैयार हो जाता है जो उच्चवर्गीय होने का दावा करता है। हर दम एक तरह की घुटन सी उस घर के सदस्यों को महसूस होती है। अपने मन को बहलाने के लिए पत्नी क्या-क्या करती रहती - "बेमेल पड़ी फालतू चीजों को उठाकर एकदम कुछ -का-कुछ बना देना, यहाँ की पेंटिंग वहाँ। वहाँ की यहाँ। मनकों की झालरें, झालरों में घंटिया, हाथों सें पेंट किये गमलों में कैक्टस्, मनीप्लांट, चारों ओर बस उंगलियों और रंगों का चमत्कार।"[3] शायद इस कहानी से उच्चवर्गीय स्त्रियों को अपने खाली समय का क्या किया जाए यह सवाल पैदा होता है, उसे सुलझाने की कोशिश की गयी है या यह कहा जा सकता है कि अपने अकेलेपन को वे इस प्रकार व्यतीत करती है, यह उनका गम है।

'राख' कहानी में सूर्यबालाजी ने हनुमान गढ़ी नामक एक पवित्र स्थली का अंकन किया है जिसका पावित्र्य आज नष्ट हो चुका है। लेकिन कहानी के आरंभ में ही उन्होंने स्वीकार किया है कि - 'वह

सचमुच मेरे बचपन की श्रद्धास्थली थी। अपने कस्बे से थोड़ी दूर पर स्थित वह गढ़ी का मंदिर जहाँ हम बचपन में हर महीने, पखवारे जाते। टुनटुनाती घंटियाँ और लगते भोग के संग राम, सीता, लक्ष्मण की छोटी-छोटी मूर्तियाँ अपार शक्तिमयी लगती। और विशाल पीपल के चौबारे पर बने, सिंदूर पुते हनुमान जी जैसे कितने विराट् महाशक्ति सामर्थ्यवान। भय, रोमांच और अगाध श्रद्धा भड़ी वह अनुभूति अकथनीय है।"[4] इस प्रकार इस कहानी में बचपन में देखे हुए चित्रों को ही अंकित किया गया है जिसकी आज की हालत सचमुच वैसी ही है, जैसी कहानी में अंकित की गयी है।

'कहाँतक' कहानी फिर उच्चवर्गीय जीवन का खोखलापन, पार्टियाँ, क्लब, नाच, गाना, शराब आदि को अंकित करनेवाली कहानी है। इसमें होनेवाली माँ अपनी क्लब और पार्टियों के बीच अपनी बेटी की बढ़ती उम्र को भी देखती नहीं। क्लब के वातावरण को अंकित करती हुई सूर्यबालाजी लिखती है - "ममी के पैरों की गति आरकेस्ट्रा के साथ तेज होती जा रही थी। ममी बड़ी सतर्कता से 'स्टेप्स' ले रही थी मानो किसी प्रतियोगिता में प्राइज पाने के लिए डांस कर रही हैं। उन्हें तन-बदन की सुध न थी।"[5] इस प्रकार के वातावरण में रहने के कारण ही मम्मी का अपनी बच्ची की ओर ध्यान नहीं रहा। इस कहानी में उच्चवर्गीय मानसिकता को अंकित किया है। इसके आरंभ में ही उन्होंने बताया है कि एक पूराने परिचित परिवार के इस वातावरण को देखकर उन्होंने इसे लिखा है। साथ ही इस भोग-संस्कृति का अंत करने की सलाह दी है।

'अनाम लम्हों के नाम' कहानी में मध्यवर्गीय परिवार की उधेड़बून को अंकित किया गया है जिसे सूर्यबाला जी ने स्वयं भोगा है। मध्यवर्गीय परिवार की स्त्रियों को निरंतर काम में मग्न रहना पड़ता है। साथ ही नौकरी करनेवाली अगर औरत है तो उसे और भी अधिक खटना पड़ता है - "काम --काम किधर से भी शुरू किया जा सकता है। सब एक से ही - धोना, पोंछना, मांजना, समेटना - पकी हुई दाल, सब्जी, चावल की जूठनें - उसे जल्दी-से-जल्दी जुट पड़ना चाहिए ----लेकिन वह थी कि इस पूरे उजाड़खंड के बीच पूरी तरह निर्लिप्त वैसी-की वैसी पसरी बैठी थी - बस, जैसे हिलने तक का जी नहीं कर रहा था।"[6] तीन-तीन, चार-चार महिनों में फुल चार घंटे भी उसे खाली बीताने को नहीं मिलते। इस मध्यवर्गीय जीवन की मानसिकता, विवशता को यहाँ अंकित किया है।

'गृह प्रवेश' कहानी में आतंक के वातावरण को चित्रित किया गया है जो आधुनिक काल में मनुष्य के जीवन को लगा हुआ अभिशाप है - '' सब के चेहरे विभिन्न-सी शंका, उलझन, भय, और उद्विग्नता से जमे हुए थे। बीच-बीच में हवा से सरसराते जंगली झाड़, पत्ते या किसी जानवर की आहट, सरसराहट, खामोशी को और भयानक बना जाती। थोड़ी-थोड़ी देर बाद पत्थर आते जा रहे थे। शकुन को चेहरा सफेद से पीला पड़ता जा रहा था।''[7] इस प्रकार का आतंक आज शहर में रहनेवाले हर इन्सान को भुगतना पड़ता है।

'सौदागर दुआओं के' इस कहानी में हवेली के वातावरण को अंकित किया गया है। ''मामली इन्सान! मजाक ही तो करते हैं सैयद साहब। हवेली के आदमकद बैठकखाने में एक छोर से दूसरे छोर तक हिंदुस्तान से लेकर इंग्लैड, जापान और चीन तक की बेशकीमती नक्काशीदार, सुराहियाँ, बेहतरीन चित्रकारियाँ, खालिस सोने के पानी से खुदी कुरान की सुनहरी आयतें, बारहसिंधे के लहरियादार सींग और दीवार पर कसीदे सी कढ़ी फूलदार प्लेटें - ढ़ाल-तलवारों के साथ टँगी चीते और बघेरे की खालें शिकार गाहों की बेशुमार यादों के साथ-''[8] इस प्रकार के लगभग नवाबों के जमाने के वातावरण में सूर्यबाला ले जाती है।

'सलामत जागीरें' कहानी में माँ के द्वारा किये गये बगीचे का वर्णन किया गया है - ''अक्सर ऐसी बातों के बीच वह बच्चों को पिछवाडें कि छोटी बगीची में ले जाती। भुरभुरी मिट्टी में रोपी-सँवारी क्यारियाँ हर बार एक नया पौधा, एक नई पहचान - यह नया ककरोंदे का पौधा-पिछले माह ही तो रोपा - एक चरपराती खटास। उज्जी जीभ चटखार लेती है।''[9] यहाँ दादी के द्वारा लगाये गये बगीचे का वर्णन है जिसके हर एक पौधे में दादी का प्यार समाया है।

'सुमिंतरा की बेटियाँ' कहानी में होनेवाले माहौल को अंकित करते हुए हृदयेश मयंक लिखते हैं- ''सुमिंतरा की बेटियाँ उन स्मृतियों की कहानी है जिसे शायद सूर्यबाला के अलावा कोई लिख भी नहीं सकता था। देसज अनुभूतियों के ताने-बाने में बुनी यह कहानी मूलरूप से स्वप्न भंग की कहानी है। गावों से भागकर शहरों में गये लोग (पूर्वी लोग कलकत्ता और पिश्चिमी लोग मुंबई) रोजी-रोटी की जुगाड़ में घर-परिवार से अलग हुए। ढ़ेरों के साथ ऐसा घटा। सहन गाँव की औरतों ने अपने स्वाभिमान को धात्री की तरह चिपरी पाथी टटरे की दीवारों की ओट में बचाये रखा। लोक लाज और ग्रामीण सहजीवन को बाल-सुलभ आँखों से देखती कथाकार ने

इस कहानी में अद्‌भुत भाषा व परिवेश की बुनावट की है।"[10] इस प्रकार हम देखते हैं कि एक अलग ही वातावरण को इस कहानी में चित्रित किया गया है।

'गोबरच्चा का किस्सा' कहानी में गोबरच्चा अपने पिता के साथ लड़-झगड़कर घर से बाहर निकल पड़े हैं। लेकिन उनकी सार्थक गहरी व्यंग्यात्मकता, जिंदगी की साधारनता से ईमानदार लगाव, मामूली आदमी की संघर्ष गाथा की पहचान और खोटी देशीपना इस कहानी में दिखाई देता है। गाँव के हालातों, व्यवहारों, कारनामों और खास गँवई-गाँव की भाषा का पुट लिए हुए यह कहानी लगभग अंत में एक ऐसा मोड लेता है कि वह महज व्यक्ति रेखा प्रधान न रहकर जिंदगी पर जीवंत भाष्य करनेवाली एक महत्त्वपूर्ण कहानी बन जाती है।

'दिशाहीन' कहानी में कॉलेज के वातावरण को अत्यंत सुंदर ढंग से सूर्यबाला जी ने चित्रित किया है। "मेरे लिए सर्वधा नया विश्व-नयी जगह-महानगर की विराट परिकल्पना के साथ अपरिचय एवं अजनबीपन के अहसास मुझ पर हावी होते जा रहे थे। बड़ी मुश्किल से अपने उत्साह और महत्त्वाकांक्षा की घूटती डोर संभाले मैं उस भव्य इंजीनियरिंग कालेज के कंपाउंड में रिक्शे से उतरा। कुछ पल किंकर्तव्य विमूढ़-सा खड़ा रहा। समझ में न आया किससे पूछूँ ? क्या पूछूँ ? फिर हिम्मत कर तेजी से गुजरते एक-दो लड़कों से आफिस का अता-पता पुछा। वे इतनी तेजी और फरटि से बताते हुए निकल गये कि मुझे कुछ भी समझ में नहीं आया।"[11] इंजिनियरींग कॉलेज के वातावरण को इतना यथातथ्य रूप में अंकित किया है कि उसका पूरा माहौल ही हमारे सामने आ जाता है।

वैसे तो सूर्यबाला जी की हर कहानी उनके अनुभव विश्व को साकार करती ही हमारे सामने आती है। 'संताप' कहानी के आरंभ में ही उन्होंने स्वीकार किया है कि - " असली कहानी, नहीं, वह सच इस कहानी से कहीं ज्यादा दारूण और लोमहर्षक था। मैने तो उस समूचे माहौल के बीच महसूसी, एक करूण छटपटाहट को शब्दों में बांधने की कोशिश की है।

हँसते खेलते, पिकनिक मनाते, भाई-बहन के दो परिवार अचानक-पहाड़ी धारा के वेग में समा गए। एक साथ चार मौतें। जब उस बदनसीब मकान से चार-चार अर्थियाँ उठीं तो जैसे समूचे शहर पर सियापा, एक भयानक सन्नाटा-सा।"[12] इस से पता चल्ता है कि उनकी कहानियाँ अनुभव पर आधृत कहानियाँ रही हैं। इसी प्रकार से उनकी अन्य कहानियों में भी लगभग सभी कहानियाँ इसी प्रकार से अपने अनुभव पर आधृत रही है

इसी कारण उनकी कहानियाँ अत्यंत यथार्थ कहानियों के रूप में हमारे सामने आती हैं। तभी तो ये कहानियाँ जीवन के अत्यंत समीप लगती है।

'सूर्यबाला जी की कहानियों की एक और विशेषता यह भी है कि जैसा परिवेश है, वैसा ही अंकन सूर्यबाला जी ने किया है। अर्थात् जहाँ मुसलमानी माहौल को अंकित किया है, वहाँ उर्दू भाषा के शब्दों का प्रयोग अधिक किया है जैसे - सौदागर दुआओं के। जहाँ गाँव के वातावरण को अंकित किया है वहाँ वैसे ही शब्दों को अंकित किया गया है जैसे - समिंतरा की बेटियाँ। जहाँ कॉलेज आदि के माहौल को अंकित किया गया है, वहाँ सुशिक्षित माहौल को अंकित किया गया है जैसे-दिशाहीन।

इस प्रकार हम यह देखते हैं कि सूर्यबाला जी की कहानियों में अनुभव पर आधारित परिवेश, परिस्थितियों को अंकित किया गया है।

निष्कर्ष -

निष्कर्ष रूप में हम यह कह सकते हैं कि मानवीय धरातल को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करनेवाली, अपने अनुभवों को शब्दरूप देनेवाली, मानवीय रिश्तों की पहचान करानेवाली कहानियाँ लिखनेवाली सूर्यबाला जी एक संवेदनशील साहित्यकार / कहानीकार के रूप में हमारे सामने आती है। अपने जीवन में आये अनुभवों से प्रेरणा प्राप्त कर उन्होंने उसे साकार रूप दिया है। इसी कारण इनकी कहानियाँ प्रभावशाली बन गयी हैं।

सूर्यबाला जी मध्यवर्गीय परिवार में पली-बढ़ी होने के कारण उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ अत्यंत सूक्ष्म दृष्टि से अंकित हुई हैं। उनकी कहानियों में पारिवारिक माहौल को अंकित किया गया है। परंतु साथ-ही-साथ उनकी कहानियों में कहीं पर पवित्र श्रद्धास्थानों का अंकन हुआ है, तो कहीं आधुनिक सभ्यता का प्रतीक क्लब-पार्टियों का अंकन हुआ है। बदलते माहौल के साथ उनकी परिस्थितियाँ भी सूर्यबाला जी ने अंकित किया है। शहरी जीवन के आतंक के माहौल का चित्रण कहीं हुआ है तो कहीं पर गाँव के जीवन को चित्रित किया गया है। जैसा परिवेश वैसी भाषा का प्रयोग सूर्यबाला जी ने किया है।

कुल-मिलाकर हम यह कह सकते हैं कि सूर्यबाला जी हर संवेदनशील साहित्यकार की तरह अपने परिवेश, अपनी परिस्थितियों से प्रभावित होकर अपने अनुभव पर आधृत रचनाओं की सृष्टि करती है। यही उनके साहित्य की महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

संदर्भ

1. हृदयेश मयंक - 'जनसत्ता'(कवितांगन) 12 अप्रैल,1997 पृष्ठ . 3
2. सूर्यबाला - थाली भर चाँद, पृष्ठ . 31
3. वही, पृष्ठ . 117
4. वही, पृष्ठ . 123
5. वही, पृष्ठ . 150
6. वही, पृष्ठ . 22
7. वही, पृष्ठ . 31
8. वही, पृष्ठ . 56
9. वही, पृष्ठ . 110
10. हृदयेश मयंक - जनसत्ता(कवितांगन), 12 अप्रैल, 1997, पृष्ठ . 3
11. सूर्यबाला - 'थाली भर चाँद', पृष्ठ . 98
12. वही, पृष्ट . 98